IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138
INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

नारीवादी दर्शन : वर्तमान परिदृश्य

डॉ. कुमारी सुधा देवी
सहायक प्राध्यापक
दर्शनशास्त्र विभाग
टी. एस. कॉलेज, हिसुआ

सार (Abstract)

नारीवादी दर्शन समकालीन सामाजिक, राजनीतिक और बौद्धिक विमर्श का एक सशक्त और प्रासंगिक क्षेत्र है, जो लैंगिक समानता, न्याय और मानवीय गरिमा की पुनर्स्थापना पर केंद्रित है। वर्तमान परिदृश्य में नारीवादी दर्शन केवल स्त्री-पुरुष असमानता के प्रश्नों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसमें जाति, वर्ग, नस्ल, धर्म, यौनिकता और सांस्कृतिक विविधताओं जैसे अंतर्संबंधी मुद्दों को भी समाहित किया गया है। यह दर्शन पितृसत्तात्मक संरचनाओं, सत्ता संबंधों और ज्ञान-उत्पादन की पारंपरिक प्रणालियों की आलोचनात्मक समीक्षा करते हुए वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।आधुनिक नारीवादी दर्शन में उदारवादी, उग्रवादी, समाजवादी, उत्तर-आधुनिक और उत्तर-औपनिवेशिक नारीवाद जैसी विभिन्न धाराएँ सक्रिय हैं, जो स्त्री अनुभवों की बहुलता को स्वीकार करती हैं। वर्तमान समय में डिजिटल मीडिया, वैश्वीकरण और तकनीकी विकास ने नारीवादी विमर्श को नए आयाम प्रदान किए हैं, जहाँ एक ओर सशक्तिकरण के अवसर बढ़े हैं, वहीं दूसरी ओर साइबर हिंसा, वस्तुकरण और नई प्रकार की असमानताएँ भी उभरकर सामने आई हैं।

वर्तमान परिदृश्य में नारीवादी दर्शन एक अत्यंत गतिशील और परिवर्तनकारी शोध कार्यक्रम के रूप में उभरा है। इसके समकालीन स्वरूप को निम्नलिखित प्रमुख बिंदुओं में समझा जा सकता है:

चौथी लहर और डिजिटल सक्रियता : वर्तमान समय को नारीवाद की 'चौथी लहर' के रूप में पहचाना जाता है, जो मुख्य रूप से डिजिटल तकनीक और सोशल मीडिया पर आधारित है। इसमें #MeToo जैसे आंदोलनों के माध्यम से यौन उत्पीड़न, 'रेप कल्चर' और 'बॉडी शेमिंग' जैसे मुद्दों को वैश्विक स्तर पर उठाया गया है। यहाँ तकनीक को केवल एक उपकरण नहीं, बल्कि चेतना निर्माण के एक माध्यम के रूप में देखा जा रहा है।

इंटरसेक्शनलिटी और विविधता : समकालीन नारीवादी दर्शन अब 'महिला' को एक श्रेणीबद्ध या एकरूप विषय नहीं मानता। किम्बरली क्रेंशॉ द्वारा प्रतिपादित इंटरसेक्शनलिटी का सिद्धांत अब इसके केंद्र में है, जो यह स्पष्ट करता है कि लिंग का अनुभव जाति, वर्ग, नस्ल, विकलांगता और यौन अभिविन्यास के साथ मिलकर बदल जाता है। यह "सिंगल-एक्सिस" ढांचे को चुनौती देता है जो केवल श्वेत, मध्यम वर्गीय महिलाओं के अनुभवों को मानक मानता था।

साइबर- नारीवाद और एआई का मेटाएथिक्स : डिजिटल युग में साइबर-नारीवाद तकनीक और जेंडर के अंतर्संबंधों की जांच करता है। यह इस बात पर शोध करता है कि कैसे एल्गोरिदम और एआई प्रणालियाँ लिंगभेदी पूर्वाग्रहों को दोबारा पेश कर सकती हैं। एआई का नारीवादी मेटाएथिक्स "विशेषाधिकार के खतरे" को उजागर करता है, जहाँ नीति बनाने वाले विशिष्ट समूह हाशिए के लोगों की समस्याओं को पहचानने में अक्षम होते हैं।

इको-नारीवाद और 'न्यू मेटिरियलिज्म' : आधुनिक नारीवादी दर्शन इको-नारीवाद के माध्यम से पारिस्थितिक क्षरण और महिलाओं के उत्पीड़न के बीच के वैचारिक संबंधों को जोड़ता है। 'न्यू मेटिरियलिज्म' पदार्थ की अपनी एजेंसी को स्वीकार करता है और मानव-केंद्रित दृष्टिकोण की आलोचना करता है।

नियोलिबरलिज्म की आलोचना : वर्तमान विमर्श नियोलिबरल नारीवाद की कड़ी आलोचना करता है, जो 'लीन इन' जैसी अवधारणाओं के माध्यम से केवल व्यक्तिगत सशक्तिकरण और व्यावसायिक सफलता पर जोर देता है। नारीवादी दार्शनिक तर्क देते हैं कि यह दृष्टिकोण उन संरचनात्मक बाधाओं की अनदेखी करता है जो सामूहिक कार्रवाई के बिना नहीं बदली जा सकतीं।

आज का नारीवादी दर्शन एक "संदेह की व्याख्या" है, जो पारंपरिक ज्ञानमीमांसा और तत्वमीमांसा में छिपे पुरुष-केंद्रित पूर्वाग्रहों को उजागर कर उन्हें अधिक समावेशी और न्यायपूर्ण बनाने की दिशा में कार्यरत है |